अंक-20

अदिति समाचार

मार्च-अप्रैल 2018

अदिति महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

हिन्दी विभाग, हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार (विशेष)

संपादन सहयोग

डॉ. मधु लोमेश

डॉ. विधि शर्मा

डॉ. रितु खत्री

सोनाली

प्रियंका झा

हिन्दी पत्रकारिता, तृतीय वर्ष

विशेष सहयोग

प्राचार्य डॉ. ममता शर्मा

विभाग प्रभारी

डॉ. आशा

सीरिया में मौत का तांडव
... पेज-3

देश भर में निर्भया जैसे हालात
... पेज-4

डोकलाम विवाद
... पेज-5

कॉमनवेल्थ खेलों में महिला खिलाडियों का परचम
... पेज-6

अदिति महाविद्यालय द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रम
... पेज-7

हिन्दी विभाग की गतिविधियाँ

सत्र 2017-18 के आरंभ में बी.ए. (ऑनर्स), हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार बी.ए. प्रोग्राम में हिन्दी भाषा व हिन्दी अनुशासन, बी.एल.एडए, बी.कॉम प्रोग्राम व ऑनर्स, बी.ए. ऑनर्स आदि कोर्सों में प्रथम वर्ष की छात्राओं के लिए ओरियंटेशन कार्यक्रम रखा गया जिसमें छात्राओं को पाठ्यक्रम के स्वरूप और संबंधित प्रशनपत्रों की जानकारी छात्राओं को दी गयी। हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में हिन्दी विभाग की ओर से निबंध-लेखन, विज्ञापन-लेखन, फीचर लेखन, सवरचति कविता-लेखन इत्यादि प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाया गया जिसमें सभी कोर्सों की छात्राओं ने बढ़-चढ़कर भागीदारी की तथा पुरस्कार प्राप्त किए। 15 सितम्बर 2017 के 'ग्लोबल हिन्दी : चुनौतियां एवं संभावनाएं' विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्टी में दिल्ली विश्वविद्यालय से डॉ. यामिनी गौतम, इग्नू से डॉ. स्मिता चतुर्वेदी, दूरदर्शन से श्री विजयक्रान्ति तथा एन.डी.टी.वी. से श्री राजीव रंजन को विशेषज्ञों के रूप में आमंत्रित किया गया था। 30 अक्टूबर 2017 को बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार तथा पत्रकारिता का जेनेरिक प्रशनपत्र पढ़ने वाली अन्य कोर्सों की छात्राओं के लिए संसद-भवन भ्रमण का आयोजन किया जिसके अंतर्गत संसद के दोनों सदनों के कार्य-कलाप व संसद भवन के पुस्तकालय की जानकारी छात्राओं को दी गयी। 8-12 नवंबर 2017 तक महाविद्यालय ने बी.ए. (ऑनर्स) की छात्राओं के लिए इंदौर-मांड-उज्जैन शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया जिसमें जिसमें छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भागीदारी करते हुए इन प्रदेशों के पौराणिक एवं सांस्कृतिक महत्व से संबंधित जानकारी एकत्रित की। भाषा सहोदरी हिन्दी संस्था के तत्वाधान में महाविद्यालय के हिन्दी विभाग के सौजन्य से निबंध-लेखन प्रतियोगिता का आयोजन करवाया गया। 23 मार्च 2018 को दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी के सौजन्य से वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। संस्कृति रेडियो, प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, पृष्ठ-सज्जा इत्यादि विभिन्न विषयों से संबंधित विशेष व्याख्यानों का आयोजन किया गया जिसमें संबंधित क्षेत्रों के विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया।

जूता डॉट कॉम नाटक का मंचन

अदिति महाविद्यालय की नाट्य समिति प्रति वर्ष किसी कुशल निर्देशक के निर्देशन में एक महीने की थिएटर वर्कशॉप का आयोजन करती है जिसमें छात्राओं को थिएटर की प्रस्तुति-प्रक्रिया से परिचित करने के साथ ही पूर्णकालिक नाटक तैयार किया जाता है। इस वर्ष जाने-माने रंगमंच निर्देशक श्री सुरेन्द्र शर्मा के निर्देशन में थिएटर वर्कशॉप आयोजित की गई जिसमें 'जूता डॉट कॉम' नाटक तैयार किया गया, यह नाटक राजस्थान की प्रसिद्ध लोक-कथा पर आधारित है। इस नाटक का मंचन महाविद्यालय के सभागार में 20 मार्च 2018 को किया गया। यह नाटक रूढ़िगत संस्कारों को छोड़ते हुए व्यावहारिक सोच अपनाकर अपने जीवन में उच्च लक्ष्य निर्धारित करने तथा अपनी सोच को विस्तार देते हुए अपनी अस्मिता और स्वाभिमान के लिए मर-मिटने का संदेश देता है।

फिल्म सोसायटी-मुख्य गतिविधियाँ

अदिति महाविद्यालय में छात्राओं को फिल्म-निर्माण, फिल्म-कला के विविध पक्षों से परिचित कराते हुए फिल्म सोसायटी द्वारा गत स्तर में विविध कार्यक्रम करवाए गए। फिल्म में सूफी संगीत दे चुके सांगरी ग्रुप द्वारा सितम्बर माह में सूफी संगीत प्रस्तुत की गई जिसमें छात्राओं ने रुहानी संगीत का लाभ उठाया। फरवरी माह में पोस्टर-निर्माण, फोटोशूट एवं फिल्म समीक्षा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इनमें छात्राओं का उत्साह देखते ही बनता था। छात्राओं के मानव जीवन, पर्यावरण, वन्य प्राणी जगत, भारतीय कला एवं संस्कृति सम्बन्धी सुंदर फोटोशूट फोटो-प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया गया। जाने-माने फोटाग्राफर नीरज गेरा ने निर्णायक रूप में इन्हें सराहा। फिल्म अभिनय कौशल का आयोजन करते हुए फिल्म अभिनय प्रतिभा के गुण सिखाए गए। नसीबा स्टुडियो-प्रोडक्शन हाऊस के डायरेक्टर साद अहमद की मौजूदगी लाभदायक रही। दस्तावेजी सिनेमा-स्त्री निर्माता-निर्देशकों का योगदान विषय पर एक दिवसीय फिल्म उत्सव का आयोजन किया गया। स्त्री निर्माता निर्देशकों की फिल्में, नार्थ ईस्ट फिल्मों को प्रदर्शित किया गया।

अदिति महाविद्यालय में वार्षिकोत्सव

अदिति महाविद्यालय में वार्षिकोत्सव सामरोह काफी धूमधाम से मनाया गया क्योंकि कॉलेज के छात्राओं और अधिकारियों के लिए वार्षिकोत्सव दिवस महत्वपूर्ण होता है। वार्षिकोत्सव पर कॉलेज एक साथ मिलकर अपने कॉलेज का जशन मनाते हैं। पिछले साल के छात्र, शिक्षक, कर्मचारियों की उपलब्धियों को साझा करते हैं और ऐसा ही अदिति महाविद्यालय में हुआ और गायन व नृत्य के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

-भव्या

(तृतीय वर्ष)

भारतीय चित्र साधना फिल्म-महोत्सव

नई दिल्ली के सीरीफोर्ट ऑडिटोरियम में 19 से 21 फरवरी तक चलने वाली फिल्म महोत्सव का आयोजन भारतीय चित्र साधना संस्थान के द्वारा किया गया। इस आयोजन से दूर दराज से निर्देशक, लेखक, अभिनेता, गायक आदि शामिल हैं। फिल्म महोत्सव की शुरूआत गणेश पूजन द्वारा की गयी। समारोह में तीन दिनों तक वृत्तचित्र, लघु फिल्म, एनिमेशन और केंमपस फिल्म जैसी पांच कैटेगरी की चयनित फिल्मों का प्रदर्शन किया गया।

तीन दिनों तक समारोह की शुरूआत सुबह 11 बजे से रात 9 बजे अंत हुआ। इन तीन दिनों मास्टर क्लास लगी जिसमें पहले दिन सुदिप्तो सेन द्वारा लिया गया। दूसरे दिन मनोज तिवारी तथा मधुर भंडारकर द्वारा और अंतिम दिन सुभाष घई और के.वि. विजेन्द्र द्वारा लिया गया। मास्टर क्लास एक्टिंग, स्क्रिप्ट राइटिंग, निर्देशन आदि पर था।

मास्टर क्लास लेते समय मनोज तिवारी ने कहा की फिल्म में कोई भी रोल छोटा नहीं होता। मधुर भंडारकर जी ने कहा फिल्मों में वास्तविकता का समावेश होना चाहिए जैसे फैशन और हीरोईन का उदाहरण देते हुए कहा की मैं फिल्म बनाने से पहले सभी फिल्मों पर शोध करता हूँ तथा फिल्म जहां बनानी होती है वहाँ जाकर शोध कर लोगों से जानकारी लेते हैं तब फिल्म बनाते हैं। फिल्म आरंभ से लेकर समापन तक पूरी तरह अपने विषय से जुड़ा होना चाहिए। विषय से भटकाव फिलम को भ्रमित करता है।

उद्घाटन समारोह मे मुख्य अतिथि के रूप में सुश्री स्मृति ईरानी तथा अन्य कलाकार भी उपस्थित थे जिसमें हेमामालिनी, अर्जुन रामपाल, मन्जु बोहरा फिल्म निर्देशक, मधुर भंडारकर, आलोक कुमार तथा श्री राज दत्त आदि शामिल थे। दूसरे दिन खुला सभागार में सदिप्तो सेन, राकेश मित्तल और सुभाष घई आदि थे।

ओपन फोरम में सुभाष घई जी ने कहा की मातृभाषा में बनी फिल्मों के निर्माण को मिले बढ़ावा तथा हम जीवन पर्यंत सीखते रहते हैं अपनी अंतिम सांस तक और बौद्धिक स्तर पर आज भी हम सोने की चिड़िया हैं।

अंतिम दिन समापन समारोह में विक्टर बनर्जी, बाबुल सुप्रियो, प्रियदर्शन, सुभाष घई, के.वी. विजेंद्र, मनोज तिवारी तथा राकेश मित्तल आदि द्वारा फिल्म समारोह का समापन किया गया।

-रम्या द्विवेदी

(द्वितीय वर्ष)

सीरिया में मौत का तांडव

''पर ये भी सच है कि मौत कभी बताकर नहीं आती''

अभी कुछ ऐसा ही सीरिया में घटित हो रहा है। सीरिया में हो रहे मौत के तांडव की तस्पीरे पूरे सोशल मीडिया पर घूम रही हैं जिसे देख हर कोई यही कहेगा कि ''मौत ऐसी भी होती हैं''।

विद्रोह के कारण अभी तक तीन लाख लोगों की जान जा चुकी हैं इस ग्रहयुद्ध की वजह से पूरा सीरिया प्रभावित है। भारी बेरोजगारी, व्यापक, भ्रष्टाचार, राजनीतिक स्वतंत्रता का अभाव और राष्ट्रपति बशर अल-असद के दमन के खिलाफ निराशा ऐ सभी संघर्ष के प्रमुख कारण रहे हैं। बेरोजगारी, दमन व अन्य कारणों के अलावा संघर्ष का प्रमुख कारण 'सांप्रदायिकता' भी हैं चूंकि सीरिया सुन्नी बहुल देश है और वहां के राष्ट्रपति अल-असद शिया हैं। सीरिया की इस हालत की जिम्मेदार वहां की सरकार और लोग खुद हैं। जो इस संघर्ष से आतंकवाद को बढ़ावा दे रहे हैं। इस हालत को देखकर संयुक्त राष्ट्र संघ और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने राहत सामग्री का फायदा वही लोग उठा रहे हैं जो इस संघर्ष का समर्थन कर रहे हैं। **क्या संयुक्त राष्ट्र संघ और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के द्वारा सीरिया के लोगों को सहायता करना सही था?** 40% महिलाएं यौन शोषण की शिकार होती हैं। उन्हें राहत सामग्री उपलब्ध कराने के बदले शारीरिक संबंध बनाने पर मजबूर करते हैं और उन्हें मजबूरन यह कार्य करना पड़ता है।

प्रियंका झा (प्रथम वर्ष)

भारत बंद

वर्तमान में दलित और सवर्णों के बीच हो रहे संघर्ष देश की प्रगति में बहुत बड़ा रोड़ा हैं। जिस घर में, जिस देश में आंतरिक फूट पड़ जाए उस घर, उस देश की प्रगति और विकास का होना बहुत मुश्किल है दलितों पर अत्याचार आजादी से पहले और देश की आजादी के बाद भी अत्याचारों में कोई कमी हुई नहीं। अत्याचार रोकने के लिए संविधान में प्रावधान किए गए थे लेकिन उनका दुरुपयोग और सदुपयोग दोनों रूप में होता रहा है सवर्ण और दलित दोनों समाज के लोगों को आगे आकर इसका बातचीत से समाधान निकालना चाहिए जिससे हमारा 21वीं सदी का भारत प्रगति कर सके।

-तब्बसुम
(प्रथम वर्ष)

जेंडर विमर्श के सही मायने...

''सेक्स'' बड़ा ही अजीब शब्द है। ना जाने क्यों लोग या यूं कहिए हमारा भारतीय समाज सेक्स या सेक्स शब्द को लेकर बड़ा ही गंभीर रहता है। जैसे मानों उन्हें सदियों का अनुभव हो। जब भी कोई व्यक्ति सेक्स शब्द का प्रचलन अपने दैनिक जीवन या मसाज के सामने खुल कर कहता है तो हमारा भारतीय समाज उसे गलत नजरिए से ही देखता है जैसे कितना बड़ा पाप कर दिया हो। हमारे देश के समाज की मानसिकता अभी भी उस रूढ़िवादी सोच तक ही सीमित है या यूं कहें कि उन्हें संपूर्ण जानकारी ही नहीं मिली है। दोनों ही इसके प्रमुख कारण हैं। हमारे समाज के अनुसार, सेक्स शब्द का प्रयोग करने वाले व्यक्ति को ''शारीरिक संबंध'' से ही देखा जाता है। जो भारतीय समाज की मानसिकता को दर्शाती है। ये तो हुई समाज के अनुसार सेक्स की अवधारणा। अगर हम जेंडर की बात करें तो इसकी भी एक अलग परिभाषा समाज द्वारा गढ़ दी गई है। उनके अनुसार जेंडर अर्थात् लिंग वैसे सेक्स और जेंडर दोनों का अर्थ लिंग ही होता है। पर हमें इन्हीं दोनों के बीच के उलझन को समझना अति आवश्यक है तो हम बात कर रहे थे जेंडर की, जेंडर की उत्पत्ति संभवत: समाज द्वारा ही प्रदत्त है। उनके अनुसार, जब कोई शिशु मां की कोख से जन्म लेता है तो उसका निर्धारण समाज जेंडर के रूप में करता है कि वह शिशु लड़का है या लड़की। ये तो थी समाज की अवधारणा सेक्स और जेंडर को लेकर।

मैं क्या हूँ...

मैंने खुद से किया एक सवाल? जवाब ढूंढ़ने निकली उन लोगों के पास जिनके पास से ही मुझे से सवाल। बड़ी अजीब दुनिया है साहब पहले तो इश्क़ और मोहब्बत पर पाबंदी लगाती है फिर उसी के गीत गाती है आथ्र जिंदगी को देखिए जनाब ये तो और बेरहम निकली। अपनी उपज हो कर भी दूसरों का सौंप देती है। पहले तो अलग-अलग भावनाओं में बहना सिखाती हैं। फिर जब उनकी आदत हो जाए तो फिर कहते हैं भूल जाओ और जब सवाल पूछो उन लोगों से तो कहते हैं अपनी भावनाओं को कुचल डालो। अरे जनाब इंसान बनाया है खुदा ने हमे, कोई जानवर नहीं, लेकिन जानवर में भी भावनाएं होती हैं पा नहीं किस चौराहे पर खड़ा कर दिया है मुझे एक मशीन बना कर रख दिया है। जब चाहो बनाओ, जब चाहो तोड़ दो, जो लोग कहते हैं, बदल जाआ।

मेरा उनसे सवाल है?

हम तो बदल जाएंगे, पर खुद से पूछिए कि जिन्होंने हमे बदलने पर मजबूर कर दिया। अभी भी एक सवाल है मेरे मन में? अभी तो शुरू हुआ है सफर, और अभी ही खत्म कर दूं।

देशभर में निर्भया जैसे हालात

जम्मू कश्मीर के कठुआ में नाबालिग से बालात्कार के बाद हत्या और उत्तर प्रदेश के उन्नाव में एक युवती से बालात्कार और फिर उसके पिता की पुलिस हिरासत में हुई मौत सहित दलित एवं अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न की बढ़ती घटनाओं के विरोध में प्रदर्शनों का दौर शुरू है।

सोशल मीडिया की इसमें बड़ी भूमिका दिख रही है। इसके जरिए लोग न केवल अपने गुस्से को इज़हार कर रहें है बल्कि विरोध-प्रदर्शन के लिए आमंत्रित भी कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर फिल्म, खेल और कारोबार जगत की कई बड़ी हस्तियों ने गुस्से का इज़हार किया।

16 दिसंबर 2012 को दिल्ली की निर्भया के साथ हुए जघन्य दुष्कर्म के बाद संभवत पहली बार इतनी बड़ी संख्या में लोग सड़कों पर उतरे हैं। दिल्ली, चंडीगढ़, बैग्लुरू, सूरज, पणजी आदि शहरों में विरोध प्रदर्शन हुए। मुंबई में विरोध प्रदर्शन का केंद्र कार्टर रोड रहा। दिल्ली में दोषियों को सजा दिलाने को लेकर संसद मार्ग पर बड़ी संख्या में लोगों ने मार्च निकाला।

सोशल मीडिया में फेसबुक, टवीटर, वीडियो के जरिए आमंत्रण दिए जा रहे हैं। ''चुप्पी तोड़ा देश बचाओ'' ट्विटर पर स्पीक अप इंडिया के जरिए देशवासियों से चुप्पी तोड़ने की अपील की गई है। देश को बचाने के लिए ऐसी घटनाओं पर चुप्पी तोड़न और आवाज़ बुलंद करें। स्पीक अप... फॉर आवर डॉटर, फॉर आवर चिल्ड्रन, फॉर आवर सोसाइटी लिखकर विरोध करने को कहा गया।

-प्रियंका झा
(तृतीय वर्ष)

डोकलाम विवाद :

भारत और चीन करेंगे

द्विपक्षीय वार्ता से विवाद को हल

हाल ही में भारतीय विदेश मंत्रालय द्वारा डोकलाम विवाद को सैनिक बल के स्थान पर द्विपक्षीय वार्ता से विवाद को हल किया जा सकता है।

डोकलाम क्या है?

डोकलाम एशिया महाद्वीप में स्थित एक स्थान है जो भारत के राज्य सिक्किम की सीमा से सटा स्थान है जो चीन और भूटान की पठारी सीमा से छूता है लेकिन क्षेत्र की दृष्टि से देखें तो डोकलाम भूटान का भाग है परंतु इस पर चीन ने अपना कब्जा जमा रखा है जिस कारण डोकलाम हमेशा से विवादित रहा है।

डोकलाम की ऐतिहासिक भूमि-

डोकलाम हमेशा से चीन, भारत और भूटान के बीच विवाद का मुद्दा रहा है इस विवाद का आरंभ एंग्लो चीनी संधि सन् 1890 में जब भारत में ब्रिटिश शासन था उस दौरान ब्रिटिश आयुक्त ए डब्ल्यू और चीनी आयुक्त हो चांग जंग के बीच व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ाने के लिए और चुम्बी घाटी की सीमा की हदबंदी करने के लिए समझौता किया गया था जिसको चीन और भूटान ने सन् 1988 में 1998 में भूमि बिल पर सहमति बनाते हुए डोकलाम में शांति बहाली पर सहमति जताई। लेकिन सन् 1947 में भारत और भूटान के बीच एक संधि हुई थी कि भूटान की रक्षा नीति में भारत किसी भी प्रकार से हस्तक्षेप कर सकता था परंतु कुछ समय पशचात् वर्ष 2007 में भारत और भूटान में एक दूसरी संधि हुई जिसके अनुसार अब भारत भूटान के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं कर सकता और अब भूटान में एक दूसरी संधि हुई जिसके अनुसार अब भारत भूटान के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं कर सकता और अब भूटान स्वतंत्र रूप से कोई भी निर्णय ले सकता है।

विवाद का कारण डोकलाम विवाद का मुख्य कारण चीन द्वारा वन बेल्ट वन रोड (one belt one road) के तहत सड़क निर्माण करना चाहती है और इस सड़क को तबियत से जोड़ने को कह रहा है, चीन के इस सड़क निर्माण से भारत और भूटान दोनों ही देशों की सुरक्षा खतरे में है। भूटान ने चीन का विरोध करते हुए 29 जून 2017 को अपनी सेना को हाई अलर्ट जारी कर दिया साथ ही सीमा की सुरक्षा

महिला दिवस पर पुरुष अधिकारों की माँग

नई दिल्ली । 8 मार्च को जब संपूर्ण विश्व के साथ भारत में भी 'महिला दिवस' पूरे जोर-शोर से मानाया जाता है और खासतौर पर जब 2018 में यह आयोजन अपने 100वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है तो इसकी प्रासंगिकता पर विशेष तौर पर विचार करना आवश्यक हो जाता है।

संवैधानिक अधिकार

तो जब हर वर्ष महिला दिवस पर महिलाओं की लैंगिक समानता की बात की जाती है, सम्मान की बात की जाती है, उनके संवैधानिक अधिकारों की बात की जाती है लेकिन उसके बावजूद आज 100 सालों बाद भी धरातल पर इनका खोखलापन दिखाई देता है तो इस बात को स्वीकार करना आवश्यक हो जाता है महिला अधिकारों की बात पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं के प्रति पुरुषों की सोच में बदलाव लाए बिना संभव नहीं है लेकिन सबसे पहले इस बात को भी स्पष्ट किया जाए कि जब महिला अधिकारों की बात होती है तो वे पुरुष विरोधी या फिर उनके अधिकारों के हनन की बात नहीं होती बल्कि यह तो संपूर्ण मानवता के दोनों के ही उन्नत हितों की, एक सभ्य एवं समान समाज की बाती होती है।

इस बार महिला दिवस पर पुरुषों से बात हो.... इसलिए इस बार महिला दिवस पर पुरुषों से बात हो ताकि उनका महिलाओं के प्रति उनके नजरिए में बदलाव हो। जिस प्रकार कहा जाता है कि एक लड़की को शिक्षित करने से पूरा परिवार शिक्षित होता है उसी प्रकार एक बालक को महिलाओं के प्रति सम्मान और संवेदनशीलता की शिक्षा देने से उन पुरुषों का और उस समाज का निर्माण होगा जो स्त्री के प्रति संवेदनशील होगा क्योंकि आधी आबादी को अनदेखा करके विकास और आधुनिकता की बातें विश्व में तर्कहीन ही सिद्ध होगी।

-**श्रेया** (प्रथम वर्ष)

कॉमनवेल्थ गेम्स में महिला खिलाड़ियों का परचम

कॉमनवेल्थ गेम्स हर चार वर्ष में होते हैं। इस बार के गेम्स ऑस्ट्रेलिया के गोल्ड् कोस्ट शहर में आयोजित हुए। राष्ट्रमंडल खेलों में भारत का तीसरा स्थान रहा। भारत ने 66 पदक जीते। दर्जन भर से अधिक स्वर्ण पदक हमारी झोली में आए हैं। बैडमिंटन में तो पहली बार सोना मिला ही, भारात्तोलन, कुश्ती, शूटिंग, बॉक्सिंग जैसे खेलों में भी मेडल जीते।

इस बार राष्ट्रमंडल खेलों में महिला खिलाड़ियों का प्रदर्शन बेहतरीन रहा। मीराबाई चानू ने भारोत्तोलन में स्वर्ण पदक जीता। 196 किलो का वजन उठाकर उन्होंने इतिहास रच दिया। साइना नेहवाल ने बैडमिंटन में स्वर्ण और पीवी संधू ने रजत जीता। मैरीकॉम ने बॉक्सिंग में स्वर्ण पदक जीता। सालेह वर्षीय मनु भास्कर ने शूटिंग में स्वर्ण पदक जीता। देश की बेटियों ने साबित कर दिया की वो किसी से कम नहीं है। मणिका बतरा ने भी टेबल टेनिस में पदक जीता। देश की बेटियों ने साबित कर दिया की वो किसी से कम नहीं है। देश को गौरान्वित किया और नाए खिलाड़ियों के लिए प्रेरणात्मक उदाहरण के रूप में उभरे हैं।

-सोनाली
(तृतीय वर्ष)

मीराबाई चानू

मणिका बतरा

सोच से भिन्न भविष्य

आज प्रत्येक व्यक्ति अपने भविष्य के बारे में चिंतित है न जाने उसका क्या होगा? उससे रखी जाने वाली उम्मीदें पूरी होंगी भी या नहीं। वह अपने मां-बाप की आशाओं को परा कर पाएगा भी की नहीं? अगर सच कहतें तो चिंतित होना भी लाज़मी है क्योंकि उसी पर उसका परिवार उसकी दूरगामी पीढ़ी वह कहीं न कहीं समाज भी निर्भर है। पर चिंता का विषय यह है कि वह अपनी योग्यता व कार्यक्षमता का प्रदर्शन करे कहां? आज इस देश में प्रत्येक युवा को किसी भी क्षेत्र में घुसने ये पहले इतने सपने दिखा दिये जाते हैं कि उसका आने वाला भविष्य बस उसकी काबिलियत पर टिका है।

अगर वह उसे निखार ले तो मंज़िल साफ है परंतु इस दौर में देखा जाए तो यह बस मनगढंत बातें हैं जो उसे किसी कार्य में रूचि बनाने के लिए कह दी जाती हैं। जिससे वह ज्यादा नहीं कुछ समय के लिए ही खुश रह पाए। ख़ैर इतना सोचने और समझने से कुछ नहीं होगा।

बाकी भविष्य तो हाथ में लगे बेसन और गैस पर तेल भरी कड़ाही पर टिका है।

अदिति महाविद्यालय द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

फिल्म सोसायटी द्वारा छायांकन उत्सव 2017–18

नाट्य संस्था द्वारा जूता डॉट कॉम का मंचन

वार्षिक उत्सव

इंदौर, मांडु एवं उज्जैन यात्रा

अनुवाद कार्यशाला

डॉक्युमेन्ट्री मेकिंग

वाद-विवाद प्रतियोगिता

महाविद्यालय उत्सव

हिन्दी दिवस

विशेष व्याख्यान

मातृभाषा दिवस

संसद भ्रमण